बालिकाओं के संदर्भ में लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति का प्रभावात्मक अध्ययन।

श्वेतम कुमारी
शोधार्थी (गृह विज्ञान)
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा (बिहार)

डा० आभा झा
सहायक प्राध्यापक
नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालय
लहेरियासराय, दरभंगा (बिहार)

.....

शोध–सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं के संदर्भ में लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति का अध्ययन करना था। इसके लिए समस्तीपुर जिला क्षेत्र से कुल 140 बालिकाओं को एवं उसके अभिभावकों को उत्तरदाता के रूप में उद्देश्यात्मक चयन पद्धति का अवलोकन करते हुए चयनित किया गया। बालिकाओं के उपर निराशा मापनी एवं आत्म–विश्वास मापनी एवं उसके अभिभावकों के उपर लैंगिक अवधारणा मापनी एवं व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र को प्रशासित करते हुए प्रदत्त संग्रह का कार्य किया गया। संग्रहित किए गए प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण पद्धति के आधार पर विश्लेषित करते हुए परिणाम तैयार किया गया और पाया गया कि (i) बालिकाओं में निराशा स्तर को माता–पिता की लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति बढ़ाती है एवं आत्म–विश्वास के स्तर को घटाती है, (ii) अभिभावकों के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति पर परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है एवं (iii) शहरी क्षेत्रों के अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति अधिक होती है।

शब्द–कुंजी : बालिकाओं, संदर्भ, लैंगिक, असमानता, मनोवृत्ति, प्रभावात्मक

परिचय :

हमारे भारतीय समाज में लड़कियों को श्रद्धा एवं सम्मान का स्थान दिया गया गया है। भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा के अनुसार लड़कियों में देवी (नारी शक्ति) का वास होता है, जो परिवार एवं समाज को सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं सम्पन्नता को संभव बनाती है। हमारे शास्त्रों में लड़कियों एवं महिलाओं को आध्यात्मिकता का प्रतीक माना गया है। भारत में विभिन्न कालखंडों में लड़कियों एवं महिलाओं की स्थिति बदलती रही है। प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को अधिकारों से

वंचित रखा गया था, जबकि वैदिक काल में बालिकाओं एवं महिलाओं की स्थिति में कुछ हीं सुधार हो पाया। वैदिक काल में महिलाओं का धार्मिक कार्यों में भाग लेने की भी सामाजिक स्वीकृति दी गई एवं समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। उसके बाद मध्यकाल में पुनः महिलाओं की स्थिति निम्न होने लगी। महिलाओं को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाने लगा। इसके अलावे महिलाओं के अधिकार प्रतिबंधित किए जाने लगे। मध्यकाल के उपरान्त आधुनिक काल में एक बार पुनः महिलाओं की स्थिति में सुधार होने लगा। महिलाओं को शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाने लगा। विभिन्न प्रकार के विकासां एवं सुधारों के निमित्त महिलाओं की भूमिका स्वीकार की गई एवं उनकी भागीदारी निश्चित की जाने लगी है। विभिन्न तकनीकी विकास, सामाजिक–सांस्कृतिक समृद्धि एवं मानवीय खुशी के लिए बालिका एवं महिला संवर्ग को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

परिवार में बालिकाओं का सर्वांगीण विकास माता–पिता की भूमिका पर निर्भर करता है। माता–पिता के आपसी सकारात्मक एवं सहयोगपूर्ण संबंध से ही परिवार में अनुकूल पारिवारिक वातावरण का निर्माण होता है, जिससे परिवार की बालिकाओं का समुचित विकास संभव हो पाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से निराशा विरोध के प्रति एक सामान्य भावनात्मक प्रतिक्रिया है, जो क्रोध एवं झुंझलाहट से संबंधित होता है। अर्थात् किसी व्यक्ति की इच्छा या लक्ष्य की पूर्ति के प्रति कथित प्रतिरोध से निराशा उत्पन्न होती है और इच्छा एवं लक्ष्य को अस्वीकार अथवा अवरूद्ध किये जाने पर निराशा के बढ़ने की संभावना बढ़ जाती है। इस शोध में निराशा को आश्रित चर के रूप में सम्मिलित किया गया है।

आत्म–विश्वास का अर्थ अपने और अपनी क्षमताओं के बारे में आश्वस्त महसूस करना है। आत्म–विश्वास की मुख्य विशेषता यह होती है कि व्यक्ति यथार्थ वादी एवं सुरक्षित तरीके से अपनी क्षमताओं के बारे में विश्वास का अनुभव करता है। इस संदर्भ में शोधार्थी की विचारधारा है कि, लैंगिक असमानता की मनोवृत्ति से बालिकाओं का आत्म–विश्वास प्रभावित होता है। इसी दृष्टिकोण के आधार पर आत्म–विश्वास को भी आश्रित चर के रूप मे सम्मिलित किया गया है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा शोध शीर्षक से संबंधित पूर्व के अध्ययनों का अवलोकन किया गया है।

वेलडुक्की (2003) ने लिंग समानता और लिंग असमानता के बीच संबंधात्मक अध्ययन आधारित परिणाम में पाया है कि लिंग असमानता आधारित मनोवृत्ति, लिंग समानता

की अवधारणा को कमजोर करती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने लिंग समानता आधारित देशों में बच्चों के विषयगत प्रतिफल को भी प्रभावित होते पाया है।

निलसेन इत्यादि (2011) ने स्वास्थ्य आधारित एवं यौन आधारित चर का शोधात्मक अध्ययन किया है और बताया है कि यौन एक जैविक कारक होता है और यह व्यक्तियों में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की अवधारणाएँ सृजित करती है। इसके अलावे व्यक्ति का स्वास्थ्य स्तर भी यौन भिन्नता आधारित कारक से सार्थक रूप से प्रभावित होती है।

गोनी इत्यादि (2015) ने विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन और यौन–भिन्नता का शोधात्मक अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि यौन और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया है। साथ हीं, उन्होंने लड़के एवं लड़कियों के बीच सरकार से मिलने वाली वित्तीय सहायता में भी वृद्धि संबंधी सार्थक अंतर पाया है।

वेसलर एवं सेन्डस्ट्रॉम (2016) ने यौन भिन्नता एवं शोध–प्रदर्शन का प्रभावात्मकअध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि यौन भिन्नता संबंधी कारक शोध–प्रदर्शन को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। इसमें उन्होंने यह भी पाया है कि लड़की शोधार्थियों के शोध प्रदर्शन पर यौन–भिन्नता संबंधी कारक का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शोध का उद्देश्य :

(i) लैंगिक असमानता की अवधारणा स्पष्ट करना,

(ii) वैसे कारकों की खोज करना, जो लैंगिक असमानता की अवधारणा को बढ़ाती है।

(iii) निराशा एवं आत्मविश्वास का स्वरूप स्पष्ट करना एवं लैंगिक अवधारणा के साथ संबंधात्मक व्याख्या प्रस्तुत करना एवं

(iv) प्रस्तुत शोध के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों से संबंधित व्यक्तियों, शोधार्थियों, अभिभावकों एवं पेशेवर कार्यकर्त्ताओं को अवगत करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

शोध की परिकल्पना :

(i) उत्तरदाताओं के निराशा स्तर पर लैंगिक असमानता की अवधारणा का सकारात्मक प्रभाव होगा,

(ii) उत्तरदाताओं के आत्म–विश्वास पर लैंगिक असमानता की मनोवृत्ति का नकारात्मक प्रभाव होगा,

(iii) उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति पर आवास संबंधी कारक का सार्थक प्रभाव होगा,

(iv) उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति संबंधी कारक का सार्थक प्रभाव होगा।

प्रविधि :

(i) प्रतिदर्श :

प्रस्तुत शोध में सम्पूर्ण समस्तीपुर जिला क्षेत्र से कुल 140 बालिकाओं (उम्र सीमा 14 से 18 वर्ष) को एवं उसके अभिभावकों को उत्तरदाता के रूप में चयनित किया गया। उत्तरदाताओं क चयन में उद्देश्यात्मक चयन पद्धति का अवलोकन किया गया।

(ii) मापनियाँ :

उत्तरदाताओं से संगत प्रदत्तों के संग्रहण के लिए निम्नांकित मापनियों का प्रयोग किया गया :

(a) लैंगिक असमानता मापनी :

उत्तरदाताओं के संबंध में लैंगिक असमानता की माप के लिए स्वयं शोधार्थी द्वारा विकसित लैंगिक असमानता मापनी का उपयोग किया गया।

(b) निराशा मापनी :

उत्तरदाताओं के संबंध में निराशा स्तर की माप के लिए शर्मा, वी० द्वारा विकसित निराशा मापनी का प्रयोग किया गया।

(c) आत्म–विश्वास मापनी :

रेखा गुप्ता द्वारा विकसित आत्म–विश्वास मापनी का प्रयोग उत्तरदाताओं में आत्म–विश्वास के स्तर की माप के लिए किया गया।

(d) व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र :

शोधार्थी स्वयं द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र का प्रयोग उत्तरदाताओं के संबंध में व्यक्तिगत जानकारी हेतु किया गया।

प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया :

उत्तरदाताओं से संगत सूचनाओं की जानकारी हेतु शोधार्थी द्वारा कार्य–योजना बनाते हुए अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण किया गया। इसके बाद उत्तरदाताओं से संपर्क करते हुए उनसे मिलने का प्रयोजन बताया गया। साथ हीं, उत्तरदाताओं को विश्वास दिया गया कि उनके द्वारा दी गई सूचनाओं को गोपनीय रखा जाएगा। इसके बाद अल्प–समूह की स्थिति बनाते हुए एवं चयनित मापनियों को प्रशासित करते हुए प्रदत्त संग्रह का कार्य किया गया। इस तरह प्रदत्त–संग्रह का कार्य पूर्ण किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रदत्तों को उचित सांख्यिकीय प्रविधि द्वारा विश्लेषित किया गया एवं समसामयिक संदर्भ में परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम :

शोध कार्य में प्राप्त परिणामों को पूर्व में निर्मित्त परिकल्पनानुसार सारणी के रूप में निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या–(i)

बालिकाओं के निराशा स्तर पर लैंगिक असमानता आधारित प्रवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम

स्मूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
लैंगिक असमानता की प्रवृत्ति रखने वाले उत्तरदाताऐं	135	35.32	5.77	8.03	<.01	238
लैंगिक असमानता की प्रवृत्ति नहीं रखने वाले उत्तरदाताऐं	105	30.74	3.21			

सारणी संख्या–(ii)

लड़कियों के आत्म–विश्वास पर लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम

स्मूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
लैंगिक असमानता की प्रवृत्ति रखने वाले उत्तरदाताऐं	135	38.29	6.32	3.69	<.01	238
लैंगिक असमानता की प्रवृत्ति नहीं रखने वाले उत्तरदाताऐं	105	35.67	4.98			

सारणी संख्या–(iii)
उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता की मनोवृत्ति पर
आवास संबंधी कारक के प्रभाव से संबंधित परिणाम

स्मूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
गामीण उत्तरदाताऐं	125	36.49	6.67	3.56	<.01	238
शहरी उत्तरदाताऐं	115	32.79	4.21			

सारणी संख्या–(iv)
उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता संबंधी अवधारणा पर
सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम

स्मूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार की उत्तरदाताऐं	110	25.66	5.79	0.73	N.S.	238
निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार की उत्तरदाताऐं	130	24.96	5.27			

व्याख्या :

सारणी संख्या–(i) में प्रस्तुत किए परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के निराशा स्तर पर उसके लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है, क्योंकि लैंगिक असमानता की अवधारणा वाले उत्तरदाताओं में निराशा का स्तर उच्च पाया गया, जबकि लैंगिक असमानता की अवधारणा नहीं रखने वाले उत्तरदाताओं में निराशा का स्तर अपेक्षाकृत निम्न पाया गया। साथ हीं, दोनों समूहों के उत्तरदाताओं के द्वारा प्राप्त माध्य एव मानक विचलन के आधार पर परिकलित टी–मूल्य (8.03) विश्वास के <.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः यह परिणाम लैंगिक असमानता की निराशा के संदर्भ में सकारात्मक भूमिका को दर्शाती है एवं पूर्व में बनाई गई परिकल्पना संख्या (i) कि

''उत्तरदाताओं के निराशा स्तर पर लैंगिक असमानता की अवधारणा का सकारात्मक प्रभाव होगा'' को प्रमाणित करती है।

सारणी संख्या–(ii) के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति का उसके आत्म–विश्वास पर नकारात्मक एवं स्पष्ट प्रभाव पड़ता है, क्योंकि इस संदर्भ में लैंगिक असमानता की प्रवृत्ति वाले उत्तरदाताओं में आत्म–विश्वास का स्तर निम्न (38.29) पाया गया है, जबकि लैंगिक असमानता की पवृत्ति नहीं रखने वाले उत्तरदाताओं में आत्म–विश्वास का स्तर उच्च (35.67) पाया गया है। साथ हीं दोनों समूहों के उत्तरदाताओं के द्वारा प्राप्त माध्य एवं मानक–विचलनों के आधार पर परिकलित टी–मूल्य (3.69) विश्वास के स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः यह परिणाम भी पूर्व में बनाई गई परिकल्पना संख्या (ii) कि ''उत्तरदाताओं के आत्म–विश्वास पर लैंगिक असमानता की मनोवृत्ति का नकारात्मक प्रभाव होगा'' प्रमाणित होती है।

सारणी संख्या (iii) में वर्णित परिणाम के अवलोकन से स्पष्ट है कि, उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता संबंधी अवधारणा पर ग्रामीण–शहरी आवास संबंधी कारक का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। इस परिणाम में पाया गया है कि ग्रामीण उत्तरदाताओं में लैंगिक असमानता की अवधारणा अधिक है, जबकि शहरी उत्तरदाताओं में लैंगिक असमानता की अवधारणा अपेक्षाकृत कम है। साथ हीं, परिकलित टी–मूल्य (3.56) विश्वास के <.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है। इस तरह के परिणाम के संबंध में कहा जा सकता है कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति कायम है, जबकि शहरी क्षेत्रों में लैंगिक असमानता की अवधारणा अपेक्षाकृत कम है। अतः यह परिणाम भी पूर्व में बनाई गई परिकल्पना संख्या–(iii) कि ''उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति पर आवास संबंधी कारक का सार्थक प्रभाव होगा,'' को प्रमाणित करती है।

सारणी संख्या–(iv) में प्रस्तुत किए गए परिणाम के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता संबंधी अवधारणा पर नहीं पड़ता है, क्योंकि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार के उत्तरदाताओं ने लैंगिक असमानता आधारित मापनी पर जहाँ माध्य 25.66 एवं मानक विचलन 5.79 प्राप्त किया है, वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार के उत्तरदाताओं ने लगभग समान माध्य एवं मानक विचलन (क्रमशः 24.96 एवं 5.27) प्राप्त किया है। साथ हीं, परिकलित टी–मूल्य (.73) विश्वास के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। इस तरह के परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि, परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का व्यक्तियों के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इस तरह यह परिणाम पूर्व में बनाई गई परिकल्पना संख्या–iv कि

''उत्तरदाताओं के लैंगिक असमानता आधारित मनोवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति संबंधी कारक का सार्थक प्रभाव होगा'' को प्रमाणित नहीं करती है।

निष्कर्ष :

प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट है कि–

(i) बालिकाओं के निराशा स्तर पर लैंगिक असमानता संबंधी मनोवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

(ii) बालिकाओं का आत्म–विश्वास, लैंगिक असमानता संबंधी अवधारणा से घटती है अर्थात् लैंगिक असमानता संबंधी मनोवृत्ति बालिकाओं के आत्म–विश्वास पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

(iii) ग्रामोण क्षेत्र के व्यक्तियों में शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की अपेक्षा लैंगिक असमानता की अवधारणा अधिक होती है एवं

(iv) लैंगिक असमानता की मनोवृत्ति पर परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव नहीं पड़ता है।

परामर्शन :

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणाम के आधार पर परामर्शन के रूप में कहा जा सकता है कि लैंगिक असमानता बालिकाओं से संबंधित एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जो बालिका वर्ग को सभी तरह से प्रभावित करती है। इस स्थिति में यह आवश्यक है कि लैंगिक असमानता की मनोवृत्ति आधारित शोध कार्य व्यापक एवं मानक स्तर पर किया जाए जिससे बालिका वर्ग का सर्वांगीण विकास हो सके।

संदर्भ–सूची :

गोनी, यू० वाली, वाई०, अली, एच०के०, वाजीरी, एम० (2015) : नाईजीरिया के वोरनो राज्य के शिक्षा महाविद्यालय में विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर यौन–भिन्नता के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा और अभ्यास आधारित पत्रिका, वॉल्युम–06, नं०–32, 107–114

गुप्ता, रेखा (1990) : आत्म–विश्वास मापनी की मार्गदर्शिका, राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक केन्द्र, आगरा

निलसेन, एम० डब्लू०, स्टेफेनिक, एम०एल०, सिनबिंगर, एल० (2021) : स्वास्थ्य आधारित शोध के लिए यौन संबंधी कारक का अध्ययन, जीव विज्ञान यौन भिन्नता आधारित पत्रिका, शोध–पत्र संख्या–23

बेसेलर, पी०वी०डी० एवं सेन्डस्ट्रॉम, यू.एल.एफ. (2016) : शोधार्थी के शोध प्रदर्शन पर यौन भिन्नता आधारित कारक का अध्ययन, पी०एम०सी० प्रकाशन, 106; 143–162

वेलडुक्की, एम० (2003) : लिंग असमानता और लिंग असमानता के बीच संबंध : बुनियादी कुशलता एवं व्यक्तित्व से संबंधित व्याख्यात्मक अध्ययन, क्रमबद्ध एवं मूल्यांकन आधारित मनोवैज्ञानिक शोध पत्रिका, वोल्युम–14

शर्मा, वी०, (1990) : निराशा मापनी की मार्गदर्शिका, राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक केन्द्र, आगरा।